Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

विकसित भारत के निर्माण में भारतीय भाषाओं की भूमिका (यथार्थ से आदर्श की ओर)

डॉ. राजेंद्र सिंह* गौरव गौतम**

*** प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत**
**** शोधार्थी, तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – मानव के भाव व विचारों की संवाहिका भाषा है जो मानव के चित्ता, चिंतन और चरित्र को परिभाषित करती है। किसी देश के शासन और रहवासी की भाषा यदि समान होगी तो वहाँ विकास व समान वितरण की संभावना ज्यादा होती है जिससे सामाजिक और आर्थिक असमानता में कमी आती है जो किसी देश के विकसित होने की प्राथमिक दशा है। भारत जैसे बहुभाषी देश में विकास के अग्रगामी राह में भाषा का क्या योगदान हो सकता है यही इस शोध आलेख का उद्देश्य है।

शब्द कुंजी – होमो सेपियन,रोबोटिक्स,सिलिकॉन युग,अर्थव्यवस्था, चतुर्थ औद्योगिक क्रांति, राजभाषा अधिनियम, समावेशी विकास आदि।

प्रस्तावना – मानव समाज पाषाण युग से सिलिकॉन युग तक की साभ्यतिक यात्रा कर गतिमान है वहीं ज्ञान की दुनिया में ऋग्वेद से लेकर रोबोटिक्स तक पहुँच कर भावी पीढ़ी के लिए ज्ञान के नित नये द्वार खोल रहा है जिसमें सबसे अहम् भूमिका भाषा की रही है। होमो सेपियन का वर्चस्व अन्य प्राणियों की तुलना में यदि सबसे ज्यादा है तो भाषा के ही कारण। होमो सेपियन का समुदाय व्यापक और विस्तृत ही इसी वजह से हो सका है क्योंकि भाषा के द्वारा वह यह भी सोच सकता है कि क्या होने की आशंका है और उसके अनुरूप अपनी सुरक्षा का प्रबंध कर लेता है। भाषा की उत्पत्ति, उसके उद्भव के संबंध में डॉ. रामविलास शर्मा का मानना है कि 'मनुष्य ने अपने सूक्ष्म चिंतन की विशेषता के कारण भाषा रचना नहीं की। उसके जीवनयापन की आवश्यकताओं ने उसे ध्वनि संकेतों का उपयोग करने के लिए विवश जिया। अपने शारीरिक गठन के कारण वह अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक ध्वनि संकेतो से काम ले सका। अपने शारीरिक गठन के कारण ही आत्मरक्षा के लिए उसे अन्य पशुओं से भिन्न साधन ढूढ़ने पड़े। वह अस्त्रों का निर्माण करके श्रम करने वाला प्राणी बना। श्रम के साथ ही पशु जगत् के ध्वनि संकेतो के दायरे से बाहर निकलकर उसने मानवीय भाषा क्षेत्र में प्रवेश किया।'[1] यानी मानव को अन्य जीव जगत से अलग और विशिष्ट बनाने में भाषा की महती भूमिका है। जिस तरह मानव का अस्तित्व, विकास और तत्वरता 'भाषा' पर निर्भर करती है उसी तरह देश का उत्थान, व्यापकता और पतन भी भाषा की समृद्धि पर निर्भर है।

भाषा किसी भी देश की सबसे महत्वपूर्ण पूँजी और धरोहर है । इसका जितना ज्यादा संरक्षण और संवर्धन होगा उतनी ही अधिक गुणात्मक मात्रा में यह देश को विश्व के नक्शे में प्रसारित करती है। उसकी संस्कृति को उन्नयन कर पुष्पित, पल्लवित और फलित करती है। एक द्वीपीय आकार का देश इंग्लैंड यदि विश्व में अपने को प्रसारित कर पाता है तो उसका एक कारण अंग्रेजी भाषा है। जिन देशों में आज उनका राजनीतिक वर्चस्व खत्म हो चुका है वहाँ अंग्रेजी भाषा के कारण उनकी संस्कृति आज भी विद्यमान है।

तकनीकी के बढ़ते चरण आज चतुर्थ औद्योगिक क्रांति तक पहुँच चुके है और संपूर्ण विश्व आज सामाजिक और आर्थिक रूप से 'विश्वग्राम' का रूप ले चुका है। इस समय भी हम देख सकते है कि जिन देशों ने अपनी भाषा का उन्नयन किया है वही आज विकसित रूप में है चाहे सुदूर पूर्व का जापान हो या पश्चिम का संयुक्त राज्य अमेरिका। भारत के युवाओं ने भी जिस भाषा में शिक्षा ग्रहण की उन्हीं देशों को तुलनात्मक रूप में अपने ज्ञान से ज्यादा लाभान्वित कर रहे है। ऐसी स्थिति में भारतेंदु की बात याद आती है कि

'अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषाज्ञान बिन, रहत हीन के हीन'[2]

जब भारत विश्व की पाँचवीं अर्थव्यवस्था है और क्रय शक्ति समता की दृष्टि से उसका तीसरा स्थान है तब यह तो नहीं कहा जा सकता कि भारत ने उन्नति नहीं की है। लेकिन जब हम अपनी नजर ग्लोबल हंगर इंडेक्स पर डालते है, विश्व के विश्वविद्यालयों में भारत का स्थान देखते है तो भारतवासी होने के कारण हमारी स्थिति निराशाजनक होती है। ऐसा क्यों है कि देश की अनौपचारिक आर्थिक राजधानी में एक तरफ गगनचुंबी ईमारतें है जिनका वैभव और ऐश्वर्य शायद स्वर्ग की अमरावती से भी ज्यादा हो किंतु दूसरी ओर 'धारावी' की झुग्गी–झोपड़ी है जहाँ कि स्थिति भी शायद रौरव नरक से ज्यादा भयावह होंगी। क्या इसका एक कारण भाषा नहीं है?

स्वतन्त्र भारत में जिनके ऊपर नीति निर्धारण की जिम्मेदारी थी क्या उन्होंने उसी भाषा में नीति का निर्माण किया जिसे इस देश की जनता समझती हो। क्या न्याय देने वाले और न्याय पाने वाले की भाषा एक है ? कवि उदय प्रकाश की 'गेम सैंक्चुअरी' शीर्षक से एक कविता है जिसमें डाक बँगले का बूढ़ा नौकर गंभीर गमजदा होकर नए अफसर के बारे में सोचता है–

'सैंतालीस के पहले जैसी ही हैं
उन नौजवान अफसरों की आँखें'[3]

'सैंतालीस के पहले' अर्थात् स्वतंत्रता के पूर्व और उसके पश्चात् भी अफसरों के कार्य करने की रीति एक जैसे थी भले उनकी नियत देश के प्रति सकारात्मक हुई होगी। लेकिन विकास की समावेशी नीति पूर्ण सफल न हो

पायी।'राजभाषा' अधिनियम में भी यह देखा गया है कि 'भाषा' के प्रति संकीर्ण रवैया अपनाया गया और 'राज' को महत्ता दी गयी। 'राज' से तात्पर्य सत्ता प्राप्ति से है जिसके लिए भाषा संबंधी मुद्दों में निर्णय लेने में संकोच करते हुए उसे भविष्य के गर्त में धकेला गया जिसका परिणाम मातृभाषा और लोकभाषा की क्षीणता और कुछ बोलियों की समाप्ति के रूप देखा जा सकता है जिससे क्षुब्ध और व्यथित होकर कवयित्री जेंसिता केरकेट्टा शब्दों के द्वारा क्षोभ प्रकट करते हुए कहती है कि

'मातृभाषा खुद नहीं मरी थी
उसे मारा गया था
पर, माँ यह कभी न जान सकी।'[4]

माँ जान नहीं पायी कि क्योंकि वह अपने बच्चे को पराई भाषा इसलिए पढ़ा लिखा रही थी कि उसकी संतानों को रोजगार मिल जाए। जीवन को व्यतीत करने के 'प्रबंध' में आने वाली पीढ़ी कब अपनी भाषा से अपना सरोकार भुला बैठी इसका उसे पता ही नहीं चला। भाषा भी हवा और जल की तरह होती है इसकी भी कमी का एहसास तभी होता है जब यह हमारे बीच मौजूद न हो। जिस तरह मानवीय क्रियाकलाप से जल और वायु को दूषित किया गया। उनकी गुणवत्ता में गिरावट आई। उसी तरह से क्षुद्र स्वार्थ के लिए भाषा को भी मलिन किया गया। भाषा का स्वाभाविक विकास नहीं होने दिया गया। सरलता, कठिनता के क्रम में शब्दों में हेर-फेर किया गया। जिसका प्रभाव भाषा की 'जीनीयस' पर पड़ा। वह स्वभाविक स्वरूप में न रहकर कृत्रिम रूप सामने आने लगा।

भाषा संस्कृति की जड़ होती है। भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति में चार कोस में पानी और आठ कोस में बानी बदलती है। किंतु यह वैविध्य भिन्नता का नहीं वरन् एकता का द्योतक है। अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचलित बोली अपने पड़ोसी बोली के साथ सामंजस्य बिठाकर 'एका' रचती है और बोली से उपभाषाय फिर भाषा का रूप ग्रहण करती है। भाषा को पोषण बोलियों से ही मिलता है और ऊर्जा अन्य भाषा के संपर्क से। इसीलिए भारत में षटभाषा का महत्व था। भाषाओं में आपसी आदान प्रदान था तभी केरल का व्यक्ति कश्मीर और कश्मीर का व्यक्ति केरल की आवाजाही सरलता से कर लेते थे। जबकि तब संचार के इतने प्रबल साधन ने थे और न ही उन्नत तकनीकी उपकरण। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी देश की एकता के लिए भाषायी समन्वय पर जोर दिया गया था लेकिन कुछ लोगों द्वारा हिंदी-उर्दू, उत्तार बनाम दक्षिण भाषायी गतिरोध की स्थिति उतपन्न की जाती है जिसे हाल ही में एक नेता के बयान में भी देखा जा सकता है जिन्होंने उत्तार और दक्षिण को अलग करने की बात कही यह तर्क देकर कि दोनों जगह की संस्कृति अलग-अलग है। वह शायद यह भूल गए होंगे कि उत्तार से ज्ञान का समुद्र पीने वाले अगस्त्य मुनि दक्षिण जाते है तो दक्षिण से शंकराचार्य आकर पूरे भारत के एकता के सूत्र को दृढ़ करते है।

भारत पश्चिमी देशों की भाँति केवल राष्ट्र- राज्य नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक राज्य है जहाँ एकता को मजबूती राजनीति से ज्यादा संस्कृति के माध्यम से मिलती है। भारतीय संविधान की 22 भाषाएँ भारत की कमजोरी नहीं वरन् इसकी मजबूती है। सामाजिक, भौगोलिक, और पारिस्थितिकी कारणों से भाषा में बदलाव स्वाभाविक है जो देश को शब्द संपदा से संपन्न करते है जिससे देशवासियों के मानसिक क्षितिज को व्यापकता मिलती है।

भारत की कोई एक राजभाषा नहीं हो सकती। जैसे अन्य देशों में है। भाषायी सद्भाव ही देश की एकता का प्रतीक है। पाकिस्तान का विभाजन भी बांग्लादेश के रूप में भाषायी कट्टरपन के ही कारण हुआ था। श्रीलंका में भी तमिल और सिंहली के वर्चस्व के कारण ही अस्थिरता हुई थी जिसके कुछ अवयव अभी भी विद्यमान है। भारत की समावेशी, सामंजस्यपूर्ण और समन्वयवादी प्रवृत्ति के कारण भाषायी विवाद उग्र नहीं है लेकिन भाषा का स्वरूप कोई स्थैतिक नहीं वरन् गतिक होता है इसको ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति में यह प्रावधान किया है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दी जायेगी। शिक्षा की औपचारिक शुरुआत के पूर्व ही मातृभाषा में शब्दभंडार होता है जिससे उसकी माध्यम से ज्ञान प्राप्ति द्वारा विषय की ग्राह क्षमता ज्यादा होती है और समझ भी परिपक्व होती है जिससे व्यक्ति अन्य भाषा व गूढ़ विषय भी जल्दी सीखता है। देश के राष्ट्रपति व मिसाइल मैन के नाम से विख्यात डॉ एपीजे कलाम ने कहा कि मेरी गणित और विज्ञान की समझ इसीलिए ठीक है कि मैंने मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की है। मध्यप्रदेश सरकार ने मेडिकल की उच्च शिक्षा भी हिंदी में प्रदान करना आरम्भ किया है इससे अन्य भाषा समझने का जो अतिरिक्त बोझ बच्चों में पड़ता है उसमें कमी आयेगी और वह अपनी विषय से संबंधित पकड़ को मजबूत करेंगे। यह प्रयास अभी शिशु अवस्था में है जिस पर उचित क्रियान्वयन कर ज्ञान के अन्य अनुशासनों में भी यह प्रयास किया जा सकेगा। इससे एक लाभ यह भी मिलेगा कि देश में मौजूद जो पारंपरिक ज्ञान है वह देशज भाषा में ही है जिसको संरक्षित और संवर्धित करते हुए नूतन ज्ञान को अपनाने का मार्ग प्रशस्त होगा।

निज भाषा उन्नति के साथ-साथ भारतेंदु ने यह भी कहा था कि

'बिबिध कला शिक्षा अमित ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहु भाषा माँहि प्रचार ।।'[5]

निज भाषा के साथ अन्य भाषा को भी अपनाना जरूरी है ताकि वहाँ की ज्ञान संपदा को हम जान सके और अपने परिवेश के अनुकूल अपना सके तभी हम विश्व के साथ कदमताल कर पायेंगे। लेकिन बाहर की भाषा को ज्ञान प्राप्ति की सीढ़ी बनाने से समाज का बहुजन हिस्सा विकास के मुख्यधारा से बाहर ही रहेगा। भारत ने 5 ट्रिलियन डॉलर का लक्ष्य रखा है जिसके साथ सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान दिया जा रहा है। जिसकी प्राप्ति का पहला कदम समावेशी विकास होगा। जिसके लिए सबसे आवश्यक यह है कि सरकार और जनता के बीच संवाद सुगम हो। नीति जिनके खातिर बनायी जा रही वो उसको समझ सके तभी उनका अनुपालन करने में सक्षम होंगे और जो भी व्यवहारिक परेशानी होगी उसे साझा कर निदान की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज पंचम संस्करण राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 110002,पेज 75
2. https://hindi-kavita.com/HindiSelectedPoetryBharatenduHarishchandra.php#Kavita21(5Kavita21 (5 मार्च 2024 तक चालू)
3. जितेंद्र श्रीवास्तव, कविता का घनत्व, प्रथम संस्करण, सेतु प्रकाशन, पेज 113
4. https://www.hindwi.org/kavita/matribhasha-ki-maut-jacinta-kerketta-kavita (5 मार्च 2024 तक चालू)
5. https://hindi-kavita.com/HindiSelectedPoetryBharatenduHarishchandra.php#Kavita21(5 मार्च 2024 तक चालू)